ايـاتها ٨٥ ﴿٤٠﴾ سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ ﴿٦٠﴾ ركوعاتها ٩

सूरए मुअमिन मक्किय्या है, इस में पचासी आयतें और नव रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْۢبِ وَ

येह किताब उतारना है अल्लाह की त़रफ़ से जो इ़ज़्ज़त वाला इ़ल्म वाला गुनाह बख़्शने वाला और

قَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ اِلَيْهِ

तौबा क़बूल करने वाला[2] सख़्त अ़ज़ाब करने वाला[3] बड़े इन्आ़म वाला[4] उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी की त़रफ़

الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ

फिरना है[5] अल्लाह की आयतों में झगड़ा नहीं करते मगर काफ़िर[6] तो ऐ सुनने वाले तुझे धोका न दे

تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّ الْاَحْزَابُ مِنْۢ

इन का शहरों में अहले गहले फिरना[7] इन से पहले नूह़ की क़ौम और उन के बा'द के गुरौहों[8]

بَعْدِهِمْ ۪ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ

ने झुटलाया और हर उम्मत ने येह क़स्द किया कि अपने रसूल को पकड़ लें[9] और बात़िल के साथ झगड़े

لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ

कि उस से ह़क़ को टाल दें[10] तो मैं ने उन्हें पकड़ा फिर कैसा हुवा मेरा अ़ज़ाब[11] और यूंही

1 : "**सूरए मुअमिन**" इस का नाम सूरए ग़ाफ़िर भी है, येह सूरत मक्किय्या है, सिवाए दो आयतों के जो "اَلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ" से शुरूअ़ होती हैं। इस सूरत में नव रुकूअ़ और पचासी आयतें और एक हज़ार एक सो निनानवे कलिमे और चार हज़ार नव सो साठ हुरूफ़ हैं। 2 : ईमानदारों की। 3 : काफ़िरों पर। 4 : आ़रिफ़ों (अहले मा'रिफ़त) पर। 5 : बन्दों को आख़िरत में। 6 : या'नी कुरआने पाक में झगड़ा करना काफ़िर के सिवा मोमिन का काम नहीं। अबू दावूद की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कुरआन में झगड़ा करना कुफ़्र है। झगड़े और जिदाल से मुराद आयाते इलाहिय्यह में त़ा'न करना और तक्ज़ीब व इन्कार के साथ पेश आना है और ह़ल्ले मुश्किलात व कश्फ़े मो'ज़िलात के लिये इ़ल्मी व उसूली बह़सें जिदाल नहीं बल्कि आ'ज़म त़ाआ़त में से हैं। कुफ़्फ़ार का झगड़ा करना आयात में येह था कि वोह कभी कुरआने पाक को सेह़र कहते कभी शे'र कभी कहानत कभी दास्तान। 7 : या'नी काफ़िरों का सिह़ह़तो सलामती के साथ मुल्क मुल्क तिजारतें करते फिरना और नफ़्अ़ पाना तुम्हारे लिये बाइ़से तरद्दुद न हो कि येह कुफ़्र जैसा अ़ज़ीम जुर्म करने के बा'द भी अ़ज़ाब से अम्न में रहे क्यूं कि इन का अन्जामे कार ख़्वारी और अ़ज़ाब है, पहली उम्मतों में भी ऐसे ह़ालात गुज़र चुके हैं। 8 : आ़द व समूद व क़ौमे लूत़ वग़ैरा 9 : और उन्हें क़त्ल और हलाक कर दें। 10 : जिस को अम्बिया लाए हैं। 11 : क्या उन में का कोई इस से बच सका।

www.dawateislami.net

حَقَّتۡ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنَّهُمۡ اَصۡحٰبُ النَّارِ ﴿۶﴾ وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم وقف لازم

तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो चुकी है कि वोह दोज़ख़ी हैं

اَلَّذِيۡنَ يَحۡمِلُوۡنَ الۡعَرۡشَ وَمَنۡ حَوۡلَهٗ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَ

वोह जो अ़र्श उठाते हैं[12] और जो उस के गिर्द हैं[13] अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते[14] और

يُؤۡمِنُوۡنَ بِهٖ وَيَسۡتَغۡفِرُوۡنَ لِلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۚ رَبَّنَا وَسِعۡتَ كُلَّ شَيۡءٍ

उस पर ईमान लाते[15] और मुसल्मानों की मग़्फ़िरत मांगते हैं[16] ऐ रब हमारे तेरे रह़मत व इ़ल्म में

رَّحۡمَةً وَّعِلۡمًا فَاغۡفِرۡ لِلَّذِيۡنَ تَابُوۡا وَاتَّبَعُوۡا سَبِيۡلَكَ وَقِهِمۡ عَذَابَ

हर चीज़ की समाई है[17] तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले[18] और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से

الۡجَحِيۡمِ ﴿۷﴾ رَبَّنَا وَاَدۡخِلۡهُمۡ جَنّٰتِ عَدۡنِ ۣالَّتِيۡ وَعَدۡتَّهُمۡ وَمَنۡ صَلَحَ

बचा ले ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है और उन को जो नेक हों

مِنۡ اٰبَآئِهِمۡ وَاَزۡوَاجِهِمۡ وَذُرِّيّٰتِهِمۡ ؕ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۙ﴿۸﴾

उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में[19] बेशक तू ही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنۡ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوۡمَئِذٍ فَقَدۡ رَحِمۡتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ

और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तू ने उस पर रह़्म फ़रमाया और येही

هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ﴿۹﴾ ع اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُنَادَوۡنَ لَمَقۡتُ اللّٰهِ اَكۡبَرُ ع

बड़ी काम्याबी है बेशक जिन्हों ने कुफ़्र किया उन को निदा की जाएगी[20] कि ज़रूर तुम से अल्लाह की बेज़ारी इस से बहुत ज़ियादा है

مِنۡ مَّقۡتِكُمۡ اَنۡفُسَكُمۡ اِذۡ تُدۡعَوۡنَ اِلَى الۡاِيۡمَانِ فَتَكۡفُرُوۡنَ ﴿۱۰﴾ قَالُوۡا رَبَّنَاۤ

जैसे तुम आज अपनी जान से बेज़ार हो जब कि तुम[21] ईमान की त़रफ़ बुलाए जाते तो तुम कुफ़्र करते कहेंगे ऐ हमारे रब

---

12 : या'नी मलाएका ह़ामिलीने अ़र्श जो अस्ह़ाबे कुर्ब और मलाएका में अशरफ़ व अफ़्ज़ल हैं। **13 :** या'नी जो मलाएका कि अ़र्श का त़वाफ़ करने वाले हैं उन्हें कर्रूबी कहते हैं और येह मलाएका में साह़िबे सियादत (अ़ज़्मतो शरफ़ वाले) हैं। **14 :** और "سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ" कहते। **15 :** और उस की वह़्दानिय्यत की तस्दीक़ करते। शह्‌र बिन ह़ौशब ने कहा कि ह़ामिलीने अ़र्श आठ हैं उन में से चार की तस्बीह़ येह है : "سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمۡدِکَ لَکَ الۡحَمۡدُ عَلٰی حِلۡمِکَ بَعۡدَ عِلۡمِکَ" और चार की येह : "سُبۡحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمۡدِکَ لَکَ الۡحَمۡدُ عَلٰی عَفۡوِکَ بَعۡدَ قُدۡرَتِکَ"। **16 :** और बारगाहे इलाही में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते हैं : **17 :** या'नी तेरी रह़मत और तेरा इ़ल्म हर चीज़ को वसीअ़ है। **फ़ाएदा :** दुआ़ से पहले अ़र्ज़े सना से मा'लूम हुवा कि आदाबे दुआ़ में से येह है कि पहले अल्लाह तआ़ला की ह़म्दो सना की जाए फिर मुराद अ़र्ज़ की जाए। **18 :** या'नी दीने इस्लाम पर। **19 :** उन्हें भी दाख़िल कर। **20 :** रोज़े क़ियामत, जब कि वोह जहन्नम में दाख़िल होंगे और उन की बदियां उन पर पेश की जाएंगी और वोह अ़ज़ाब देखेंगे तो फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : **21 :** दुन्या में।

www.dawateislami.net

اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَ اَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

तू ने हमें दो बार मुर्दा किया और दो बार ज़िन्दा किया[22] अब हम अपने गुनाहों पर मुक़िर हुए तो आग से

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۱۱﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَ

निकलने की भी कोई राह है[23] येह इस पर हुवा कि जब एक **अल्लाह** पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते[24] और

اِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿۱۲﴾ هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ

उस का शरीक ठहराया जाता तो तुम मान लेते[25] तो हुक्म **अल्लाह** के लिये है जो सब से बुलन्द बड़ा वोही है कि तुम्हें अपनी निशानियां

اٰيٰتِهٖ وَ يُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَ مَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿۱۳﴾

दिखाता है[26] और तुम्हारे लिये आस्मान से रोज़ी उतारता है[27] और नसीहत नहीं मानता[28] मगर जो रुजूअ़ लाए[29]

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۴﴾ رَفِيْعُ

तो **अल्लाह** की बन्दगी करो निरे उस के बन्दे हो कर[30] पड़े बुरा मानें काफ़िर बुलन्द दरजे

الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ

देने वाला[31] अ़र्श का मालिक ईमान की जान (या'नी) वह्य डालता है अपने हुक्म से अपने बन्दों में जिस पर चाहे[32]

لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿۱۵﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ۬ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ

कि वोह मिलने के दिन से डराए[33] जिस दिन वोह बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएंगे[34] **अल्लाह** पर उन का कुछ ह़ाल छुपा

شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿۱۶﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى

न होगा[35] आज किस की बादशाही है[36] एक **अल्लाह** सब पर ग़ालिब की[37] आज हर जान

---

22 : क्यूं कि पहले नुत़्फ़ए बेजान थे, इस मौत के बा'द उन्हें जान दे कर ज़िन्दा किया फिर उ़म्र पूरी होने पर मौत दी फिर बअ़्स के लिये ज़िन्दा किया। **23 :** इस का जवाब येह होगा कि तुम्हारे दोज़ख़ से निकलने की कोई सबील नहीं और तुम जिस ह़ाल में हो जिस अ़ज़ाब में मुब्तला हो इस से रिहाई की कोई राह नहीं पा सकते। **24 :** या'नी इस अ़ज़ाब और इस के दवाम व ख़ुलूद (हमेशा रहने) का सबब तुम्हारा येह फ़े'ल है कि जब तौह़ीदे इलाही का ए'लान होता और "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहा जाता तो तुम उस का इन्कार करते और कुफ़्र इख़्तियार करते। **25 :** और उस शिर्क की तस्दीक़ करते। **26 :** या'नी अपनी मस्नूआ़त के अ़जाइब जो उस के कमाले क़ुदरत पर दलालत करते हैं मिस्ल हवा और बादल और बिजली वग़ैरा के। **27 :** मींह बरसा कर। **28 :** और इन निशानियों से पन्द पज़ीर (नसीह़त क़बूल करने वाला) नहीं होता। **29 :** तमाम उमूर में **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ और शिर्क से ताइब हो। **30 :** शिर्क से कनारा कश हो कर। **31 :** अम्बिया व औलिया व उ़लमा को जन्नत में। **32 :** या'नी अपने बन्दों में से जिस को चाहता है मन्सबे नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाता है और जिस को नबी बनाता है उस का काम होता है **33 :** या'नी ख़ल्क़े ख़ुदा को रोज़े क़ियामत का ख़ौफ़ दिलाए जिस दिन अहले आस्मान और अहले ज़मीन और अव्वलीनो आख़िरीन मिलेंगे और रूहें जिस्मों से और हर अ़मल करने वाला अपने अ़मल से मिलेगा। **34 :** क़ब्रों से निकल कर और कोई इमारत या पहाड़ और छुपने की जगह और आड़ न पाएंगे। **35 :** न आ'माल न अक़्वाल न दूसरे अह़वाल और **अल्लाह** तआ़ला से तो कोई चीज़ कभी नहीं छुप सकती लेकिन येह दिन ऐसा होगा कि उन लोगों के लिये कोई पर्दा और आड़ की चीज़ न होगी जिस के ज़रीए से वोह अपने ख़याल में भी अपने ह़ाल को छुपा सकें और ख़ल्क़ की फ़ना के बा'द **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा **36 :** अब कोई न होगा कि जवाब दे ख़ुद ही जवाब में

www.dawateislami.net

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿۱۷﴾

अपने किये का बदला पाएगी[38] आज किसी पर ज़ियादती नहीं बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है

وَ اَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ؕ مَا

और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से[39] जब दिल गलों के पास आ जाएंगे[40] ग़म में भरे और

لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّ لَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ﴿۱۸﴾ يَعْلَمُ خَآىِٕنَةَ الْاَعْيُنِ وَ مَا

ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए[41] अल्लाह जानता है चोरी छुपे की निगाह[42] और जो कुछ

تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾ وَ اللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ؕ وَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ

सीनों में छुपा है[43] और अल्लाह सच्चा फ़ैसला फ़रमाता है और उस के सिवा जिन

دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَیْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿۲۰﴾ ع اَوَ لَمْ يَسِيْرُوْا

को[44] पूजते हैं वोह कुछ फ़ैसला नहीं करते[45] बेशक अल्लाह ही सुनता देखता है[46] तो क्या उन्हों ने

فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते कैसा अन्जाम हुवा उन से अगलों का[47]

كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ

उन की कुव्वत और ज़मीन में जो निशानियां छोड़ गए[48] उन से ज़ाइद तो अल्लाह ने उन्हें

بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَ مَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۲۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ

उन के गुनाहों पर पकड़ा और अल्लाह से उन का कोई बचाने वाला न हुवा[49] येह इस लिये कि उन

फ़रमाएगा कि अल्लाह वाहिदे क़हहार की और एक क़ौल येह है कि रोज़े क़ियामत जब तमाम अव्वलीनो आख़िरीन हाज़िर होंगे तो एक निदा करने वाला निदा करेगा, आज किस की बादशाही है? तमाम ख़ल्क़ जवाब देगी : "لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ" अल्लाह वाहिदे क़हहार की, जैसा कि आगे इर्शाद होता है : **37 :** मोमिन तो येह जवाब बहुत लज़्ज़त के साथ अ़र्ज़ करेंगे क्यूं कि वोह दुन्या में येही ए'तिक़ाद रखते थे येही कहते थे और इसी की बदौलत उन्हें मर्तबे मिले और कुफ़्फ़ार ज़िल्लतो नदामत के साथ इस का इक़रार करेंगे और दुन्या में अपने मुन्किर रहने पर शरमिन्दा होंगे। **38 :** नेक अपनी नेकी का और बद अपनी बदी का। **39 :** इस से रोज़े क़ियामत मुराद है। **40 :** शिद्दते ख़ौफ़ से न बाहर ही निकल सकें न अन्दर ही अपनी जगह वापस जा सकें। **41 :** या'नी काफ़िर शफ़ाअ़त से महरूम होंगे। **42 :** या'नी निगाहों की ख़ियानत और चोरी ना महरम को देखना और मम्नूआ़त पर नज़र डालना। **43 :** या'नी दिलों के राज़। सब चीज़ें अल्लाह तआ़ला के इल्म में हैं। **44 :** या'नी जिन बुतों को येह मुश्रिकीन **45 :** क्यूं कि न वोह इल्म रखते हैं न कुदरत तो उन की इबादत करना और उन्हें ख़ुदा का शरीक ठहराना बहुत ही खुला बातिल है। **46 :** अपनी मख़्लूक़ के अक़्वाल व अफ़आ़ल और जुम्ला अह़वाल को। **47 :** जिन्हों ने रसूलों की तक्ज़ीब की थी। **48 :** क़ल्ए़ और मह़ल और नहरें और हौज़ और बड़ी बड़ी इमारतें। **49 :** कि अ़ज़ाबे इलाही से बचा सकता, आ़क़िल का काम है कि दूसरे के ह़ाल से इब्रत ह़ासिल करे। इस अ़ह्द (ज़माने) के काफ़िर येह ह़ालात देख कर क्यूं इब्रत ह़ासिल नहीं करते, क्यूं नहीं सोचते कि पिछली क़ौमें इन से ज़ियादा क़वी व तुवाना और साह़िबे सरवत व इक़्तिदार होने के बा वुजूद इस इब्रत नाक त़रीक़े पर तबाह कर दी गई, येह क्यूं हुवा।

www.dawateislami.net

تَاْتِیْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِیٌّ شَدِیْدُ

के पास उन के रसूल रोशन निशानियां ले कर आए[50] फिर वोह कुफ़्र करते तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा बेशक अल्लाह ज़बर दस्त सख़्त अ़ज़ाब

الْعِقَابِ ﴿۲۲﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰیٰتِنَا وَ سُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۲۳﴾ اِلٰى

वाला है और बेशक हम ने मूसा को अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ भेजा

فِرْعَوْنَ وَ هَامٰنَ وَ قَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿۲۴﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

फ़िरऔ़न और हामान और क़ारून की त़रफ़ तो वोह बोले जादूगर है बड़ा झूटा[51] फिर जब वोह उन पर

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْۤا اَبْنَآءَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَ اسْتَحْیُوْا

हमारे पास से ह़क़ लाया[52] बोले जो इस पर ईमान लाए उन के बेटे क़त्ल करो और औ़रतें

نِسَآءَهُمْ ؕ وَ مَا كَیْدُ الْكٰفِرِیْنَ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ﴿۲۵﴾ وَ قَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْۤ

ज़िन्दा रखो[53] और काफ़िरों का दाव नहीं मगर भटकता फिरता[54] और फ़िरऔ़न बोला[55] मुझे छोड़ो

اَقْتُلْ مُوْسٰى وَ لْیَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّیْۤ اَخَافُ اَنْ یُّبَدِّلَ دِیْنَكُمْ اَوْ اَنْ

मैं मूसा को क़त्ल करूं[56] और वोह अपने रब को पुकारे[57] मैं डरता हूं कहीं वोह तुम्हारा दीन बदल दे[58] या

یُّظْهِرَ فِی الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿۲۶﴾ وَ قَالَ مُوْسٰۤى اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَ رَبِّكُمْ

ज़मीन में फ़साद चमकाए[59] और मूसा ने[60] कहा मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं

50 : मो'जिज़ात दिखाते। **51 :** और उन्हों ने हमारी निशानियों और बुरहानों को जादू बताया। **52 :** या'नी नबी हो कर पयामे इलाही लाए तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़नी **53 :** ताकि लोग ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के इत्तिबाअ़ से बाज़ आएं। **54 :** कुछ भी कारआमद नहीं बिल्कुल निकम्मा और बेकार। पहले भी फ़िरऔ़नियों ने ब हुक्मे फ़िरऔ़न ह़ज़ारहा क़त्ल किये मगर क़ज़ाए इलाही हो कर रही और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को परवर्दगारे आ़लम ने फ़िरऔ़न के घरबार में पाला, इस से ख़िदमतें कराईं, जैसा वोह दाउं फ़िरऔ़नियों का बेकार गया ऐसे ही अब ईमान वालों को रोकने के लिये फिर दोबारा क़त्ल शुरूअ़ करना बेकार है। ह़ज़रते मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات के दीन का रवाज अल्लाह तआ़ला को मन्ज़ूर है इसे कौन रोक सकता है। **55 :** अपने गुरोह से **56 :** फ़िरऔ़न जब कभी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़त्ल करने का इरादा करता तो उस की क़ौम के लोग उस को इस से मन्अ़ करते और कहते कि येह वोह शख़्स नहीं है जिस का तुझे अन्देशा है, येह तो एक मा'मूली जादूगर है इस पर तो हम अपने जादू से ग़ालिब आ जाएंगे और अगर इस को क़त्ल कर दिया तो आ़म लोग शुबे में पड़ जाएंगे कि वोह शख़्स सच्चा था ह़क़ पर था, तू दलील से उस का मुक़ाबला करने में आ़जिज़ हुवा जवाब न दे सका तो तू ने उसे क़त्ल कर दिया लेकिन ह़क़ीक़त में फ़िरऔ़न का येह कहना कि मुझे छोड़ दो मैं मूसा को क़त्ल करूं ख़ालिस धम्की ही थी, उस को ख़ुद आप के नबिय्ये बरह़क़ होने का यक़ीन था और वोह जानता था कि जो मो'जिज़ात आप लाए हैं वोह आयाते इलाहिय्यह हैं सेह़्र नहीं, लेकिन येह समझता था कि अगर आप के क़त्ल का इरादा करेगा तो आप उस को हलाक करने में जल्दी फ़रमाएंगे, इस से येह बेहतर है कि तूल बह़्स में ज़ियादा वक़्त गुज़ार दिया जाए, अगर फ़िरऔ़न अपने दिल में आप को नबिय्ये बरह़क़ न समझता और येह न जानता कि रब्बानी ताईदें जो आप के साथ हैं उन का मुक़ाबला ना मुम्किन है तो आप के क़त्ल में हरगिज़ तअम्मुल न करता क्यूं कि वोह बड़ा ख़ूंख़ार सफ़्फ़ाक ज़ालिम बे दर्द था, अदना सी बात में ह़ज़ारहा ख़ून कर डालता था। **57 :** जिस का अपने आप को रसूल बताता है ताकि उस का रब उस को हम से बचाए। फ़िरऔ़न का येह मक़ूला इस पर शाहिद है कि उस के दिल में आप का और आप की दुआ़ओं का ख़ौफ़ था, वोह अपने दिल में आप से डरता था, ज़ाहिरी इ़ज़्ज़त बनी रखने के लिये येह ज़ाहिर करता था कि वोह क़ौम के मन्अ़ करने के बाइ़स ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल नहीं करता। **58 :** और तुम से फ़िरऔ़न परस्ती और बुत परस्ती छुड़ा दे **59 :** जिदाल व क़िताल कर के। **60 :** फ़िरऔ़न की धम्कियां सुन कर।

www.dawateislami.net

مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ ٣ ع ٧ ٨

हर मुतकब्बिर से कि हिसाब के दिन पर यक़ीन नहीं लाता[61] और बोला फ़िरऔन वालों

مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ

में से एक मर्द मुसल्मान कि अपने ईमान को छुपाता था क्या एक मर्द को इस पर मारे डालते हो कि वोह कहता है मेरा रब **अल्लाह** है

وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ

और बेशक वोह रोशन निशानियां तुम्हारे पास तुम्हारे रब की त़रफ़ से लाए[62] और अगर बिलफ़र्ज़ वोह ग़लत़ कहते हैं तो उन की ग़लत़ गोई का वबाल उन पर

وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ

और अगर वोह सच्चे हैं तो तुम्हें पहुंच जाएगा कुछ वोह जिस का तुम्हें वा'दा देते हैं[63] बेशक **अल्लाह** राह नहीं देता

مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي

उसे जो ह़द से बढ़ने वाला बड़ा झूटा हो[64] ऐ मेरी क़ौम आज बादशाही तुम्हारी है इस ज़मीन में ग़लबा

الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَاۤ

रखते हो[65] तो **अल्लाह** के अ़ज़ाब से हमें कौन बचाएगा अगर हम पर आए फ़िरऔन बोला मैं

اُرِيْكُمْ اِلَّا مَاۤ اَرٰى وَمَاۤ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾ وَقَالَ

तो तुम्हें वोही सुझाता हूं जो मेरी सूझ है[66] और मैं तुम्हें वोही बताता हूं जो भलाई की राह है और वोह

الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ ۙ مِثْلَ

ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मुझे तुम पर[67] अगले गुरौहों के दिन का सा ख़ौफ़ है[68] जैसा

61 : ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरऔन की सख़्तियों के जवाब में अपनी त़रफ़ से कोई कलिमा तअ़ल्ली का न फ़रमाया बल्कि **अल्लाह** तआ़ला से पनाह चाही और उस पर भरोसा किया। येही ख़ुदा शनासों का त़रीक़ा है और इसी लिये **अल्लाह** तआ़ला ने आप को हर एक बला से मह़फ़ूज़ रखा, इन मुबारक जुम्लों में कैसी नफ़ीस हिदायतें हैं, येह फ़रमाना कि मैं तुम्हारे और अपने रब की पनाह लेता हूं और इस में हिदायत है रब एक ही है, येह भी हिदायत है कि जो उस की पनाह में आए उस पर भरोसा करे और वोह उस की मदद फ़रमाए कोई उस को ज़रर नहीं पहुंचा सकता, येह भी हिदायत है कि उसी पर भरोसा करना शाने बन्दगी है और "तुम्हारे रब" फ़रमाने में येह भी हिदायत है कि अगर तुम उस पर भरोसा करो तो तुम्हें भी सआ़दत नसीब हो। **62 :** जिन से उन का सिद्क़ ज़ाहिर हो गया या'नी नुबुव्वत साबित हो गई। **63 :** मत़लब येह है कि दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या येह सच्चे होंगे या झूटे, अगर झूटे हों तो ऐसे मुआ़मले में झूट बोल कर इस के वबाल से बच ही नहीं सकते हलाक हो जाएंगे और अगर सच्चे हैं तो जिस अ़ज़ाब का तुम्हें वा'दा देते हैं उस में से बिलफ़े'ल कुछ तुम्हें पहुंच ही जाएगा, कुछ पहुंचना इस लिये कहा कि आप का वा'दए अ़ज़ाब दुन्या व आख़िरत दोनों को आ़म था। उस में से बिलफ़े'ल अ़ज़ाबे दुन्या ही पेश आना था। **64 :** कि ख़ुदा पर झूट बांधे। **65 :** या'नी मिस्र में। तो ऐसा काम न करो कि **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आए, अगर **अल्लाह** तआ़ला का अ़ज़ाब आया **66 :** या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल कर देना। **67 :** ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब करने और इन के दरपै होने से **68 :** जिन्हों ने रसूलों की तक्ज़ीब की।

www.dawateislami.net

دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ

दस्तूर गुज़रा नूह़ की क़ौम और आद और समूद और उन के बा'द औरों का[69] और **अल्लाह** बन्दों पर

ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿۳۱﴾ وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿۳۲﴾ يَوْمَ

ज़ुल्म नहीं चाहता[70] और ऐ मेरी क़ौम मैं तुम पर उस दिन से डरता हूं जिस दिन पुकार मचेगी[71] जिस दिन

تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

पीठ दे कर भागोगे[72] **अल्लाह** से[73] तुम्हें कोई बचाने वाला नहीं और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا

उस का कोई राह दिखाने वाला नहीं और बेशक इस से पहले[74] तुम्हारे पास यूसुफ़ रोशन निशानियां ले कर आए तो

زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ

तुम उन के लाए हुए से शक ही में रहे यहां तक कि जब उन्हों ने इन्तिक़ाल फ़रमाया तुम बोले हरगिज़ अब **अल्लाह**

مِنْ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿۳۴﴾ۚۖ

कोई रसूल न भेजेगा[75] **अल्लाह** यूंही गुमराह करता है उसे जो ह़द से बढ़ने वाला शक लाने वाला है[76]

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ

वोह जो **अल्लाह** की आयतों में झगड़ा करते हैं[77] बे किसी सनद के कि उन्हें मिली हो किस क़दर सख़्त बेज़ारी की बात है **अल्लाह** के

اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ

नज़्दीक और ईमान वालों के नज़्दीक **अल्लाह** यूं ही मोहर कर देता है मुतकब्बिर सरकश के सारे

69 : कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तक्ज़ीब करते रहे और हर एक को अ़ज़ाबे इलाही ने हलाक किया। 70 : बिग़ैर गुनाह के उन पर अ़ज़ाब नहीं फ़रमाता और बिग़ैर इक़ामते हुज्जत के उन को हलाक नहीं करता। 71 : वोह क़ियामत का दिन होगा, क़ियामत के दिन को ''يَوْمُ التَّنَاد'' या'नी पुकार का दिन इस लिये कहा जाता है कि उस रोज़ त़रह त़रह की पुकारें मची होंगी, हर शख़्स अपने सर गुरौह के साथ और हर जमाअ़त अपने इमाम के साथ बुलाई जाएगी, जन्नती दोज़ख़ियों को और दोज़ख़ी जन्नतियों को पुकारेंगे, सआदत व शक़ावत की निदाएं की जाएंगी कि फ़ुलां सईद हुवा अब कभी शक़ी न होगा और फ़ुलां शक़ी हो गया अब कभी सईद न होगा और जिस वक़्त मौत ज़ब्ह़ की जाएगी उस वक़्त निदा की जाएगी कि ऐ अहले जन्नत ! अब दवाम (यहां हमेशा रहना) है मौत नहीं और ऐ अहले दोज़ख़ ! अब दवाम है मौत नहीं। 72 : मौक़िफ़े ह़िसाब (मैदाने मह़शर) से दोज़ख़ की त़रफ़। 73 : या'नी उस के अ़ज़ाब से 74 : या'नी ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से क़ब्ल 75 : येह बे दलील बात तुम ने या'नी तुम्हारे पहलों ने ख़ुद घड़ी ताकि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द आने वाले अम्बिया की तक्ज़ीब करो और उन्हें झुटलाओ तो तुम कुफ़्र पर क़ाइम रहे, ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की नुबुव्वत में शक करते रहे और बा'द वालों की नुबुव्वत के इन्कार के लिये तुम ने येह मन्सूबा बना लिया कि अब **अल्लाह** तआ़ला कोई रसूल ही न भेजेगा। 76 : उन चीज़ों में जिन पर रोशन दलीलें शाहिद हैं। 77 : उन्हें झुटला कर।

www.dawateislami.net

جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ

दिल पर[78] और फ़िरऔन बोला[79] ऐ हामान मेरे लिये ऊंचा महल बना शायद मैं पहुंच जाऊं

الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ لا اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ

रास्तों तक काहे के रास्ते आस्मानों के तो मूसा के ख़ुदा को झांक कर देखूं और बेशक मेरे गुमान में तो वोह

كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا

झूटा है[80] और यूंही फ़िरऔन की निगाह में उस का बुरा काम[81] भला कर दिखाया गया[82] और वोह रास्ते से रोका गया और

كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ ربع

फ़िरऔन का दाव[83] हलाक होने ही को था और वोह ईमान वाला बोला ऐ मेरी क़ौम मेरे पीछे चलो

اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ ج يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّ

मैं तुम्हें भलाई की राह बताऊं ऐ मेरी क़ौम येह दुन्या का जीना तो कुछ बरतना ही है[84] और

اِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا

बेशक वोह पिछला हमेशा रहने का घर है[85] जो बुरा काम करे तो उसे बदला न मिलेगा मगर

مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

उतना ही और जो अच्छा काम करे मर्द ख़्वाह औरत और हो मुसल्मान[86] तो वोह

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ

जन्नत में दाख़िल किये जाएंगे वहां बे गिनती रिज़्क़ पाएंगे[87] और ऐ मेरी क़ौम मुझे क्या हुवा

اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾ ط تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ النصف

मैं तुम्हें बुलाता हूं नजात की त़रफ़[88] और तुम मुझे बुलाते हो दोज़ख़ की त़रफ़[89] मुझे इस त़रफ़ बुलाते हो कि अल्लाह का

78 : कि उस में हिदायत क़बूल करने का कोई महल बाक़ी नहीं रहता। 79 : बराहे जह्ल व फ़रेब अपने वज़ीर से। 80 : या'नी मूसा मेरे सिवा और ख़ुदा बताने में और येह बात फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को फ़रेब देने के लिये कही क्यूं कि वोह जानता था कि मा'बूदे बरहक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला है और फ़िरऔन अपने आप को फ़रेब कारी के लिये मा'बूद ठहराता है (इस वाक़िए का बयान सूरए क़सस में गुज़र चुका) 81 : या'नी अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना और उस के रसूल को झुटलाना। 82 : या'नी शैत़ानों ने वस्वसे डाल कर उस की बुराइयां उस की नज़र में भली कर दिखाईं। 83 : जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की आयात को बात़िल करने के लिये उस ने इख़्तियार किया। 84 : या'नी थोड़ी मुद्दत के लिये ना पाएदार नफ़्अ़ है जिस को बक़ा नहीं। 85 : मुराद येह है कि दुन्या फ़ानी है और आख़िरत बाक़ी व जाविदानी और जाविदानी ही बेहतर। इस के बा'द नेक और बद आ'माल और उन के अन्जाम बताए। 86 : क्यूं कि आ'माल की मक़्बूलिय्यत ईमान पर मौक़ूफ़ है। 87 : येह अल्लाह का फ़ज़्ले अ़ज़ीम है। 88 : जन्नत की त़रफ़ ईमान व त़ाअ़त की तल्क़ीन कर के। 89 : कुफ़्रो शिर्क की दा'वत दे कर।

www.dawateislami.net

بِاللّٰهِ وَ اُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؗ وَّ اَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ

इन्कार करूं और ऐसे को उस का शरीक करूं जो मेरे इल्म में नहीं और मैं तुम्हें उस इज़्ज़त वाले बहुत बख़्शने वाले की त़रफ़

الْغَفَّارِ ۝٤٢ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَ

बुलाता हूं आप ही साबित हुवा कि जिस की त़रफ़ मुझे बुलाते हो[90] उसे बुलाना कहीं काम का नहीं दुन्या में

لَا فِي الْاٰخِرَةِ وَ اَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَ اَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ

न आख़िरत में[91] और येह हमारा फिरना **अल्लाह** की त़रफ़ है[92] और येह कि ह़द से गुज़रने वाले[93] ही

النَّارِ ۝٤٣ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ ؕ وَ اُفَوِّضُ اَمْرِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّ

दोज़ख़ी हैं तो जल्द वोह वक़्त आता है कि जो मैं तुम से कह रहा हूं उसे याद करोगे[94] और मैं अपने काम **अल्लाह** को सोंपता हूं बेशक

اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٤٤ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَ حَاقَ بِاٰلِ

अल्लाह बन्दों को देखता है[95] तो **अल्लाह** ने उसे बचा लिया उन के मक्र की बुराइयों से[96] और फ़िरऔ़न

فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝٤٥ ج اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّ عَشِيًّا ۚ وَ

वालों को बुरे अ़ज़ाब ने आ घेरा[97] आग जिस पर सुब्ह़ो शाम पेश किये जाते हैं[98] और

يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ قف اَدْخِلُوْۤا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝٤٦ وَ اِذْ

जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी हुक्म होगा फ़िरऔ़न वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो और[99] जब

يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُنَّا

वोह आग में बाहम झगड़ेंगे तो कमज़ोर उन से कहेंगे जो बड़े बनते थे हम

90 : या'नी बुत की त़रफ़ **91 :** क्यूं कि वोह जमादे बेजान है। **92 :** वोही हमें जज़ा देगा। **93 :** या'नी काफ़िर **94 :** या'नी नुज़ूले अ़ज़ाब के वक़्त तुम मेरी नसीह़तें याद करोगे और उस वक़्त का याद करना कुछ काम न देगा, येह सुन कर उन लोगों ने उस मोमिन को धम्काया कि अगर तू हमारे दीन की मुख़ालफ़त करेगा तो हम तेरे साथ बुरे पेश आएंगे, इस के जवाब में उस ने कहा **95 :** और उन के आ'माल व अह़वाल को जानता है, फिर वोह मोमिन उन से निकल कर पहाड़ की त़रफ़ चला गया और वहां नमाज़ में मश्ग़ूल हो गया, फ़िरऔ़न ने हज़ार आदमी उस की जुस्तजू में भेजे **अल्लाह** तआ़ला ने दरिन्दे उस की ह़िफ़ाज़त पर मामूर कर दिये जो फ़िरऔ़नी उस की त़रफ़ आया दरिन्दों ने उसे हलाक किया और जो वापस गया और उस ने फ़िरऔ़न से ह़ाल बयान किया फ़िरऔ़न ने उस को सूली दे दी ताकि येह ह़ाल मश्हूर न हो। **96 :** और उस ने ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ हो कर नजात पाई अगर्चे वोह फ़िरऔ़न की क़ौम का था। **97 :** दुन्या में तो येह अ़ज़ाब कि वोह फ़िरऔ़न के साथ ग़र्क़ हो गए और आख़िरत में दोज़ख़। **98 :** उस में जलाए जाते हैं। ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : फ़िरऔ़नियों की रूहें सियाह परिन्दों के क़ालिब में हर रोज़ दो मरतबा सुब्ह़ो शाम आग पर पेश की जाती हैं और उन से कहा जाता है कि येह आग तुम्हारा मक़ाम है। और क़ियामत तक उन के साथ येही मा'मूल रहेगा। **मस्अला :** इस आयत से अ़ज़ाबे क़ब्र के सुबूत पर इस्तिद्लाल किया जाता है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि हर मरने वाले पर उस का मक़ाम सुब्ह़ो शाम पेश किया जाता है, जन्नती पर जन्नत का और दोज़ख़ी पर दोज़ख़ का और उस से कहा जाता है कि येह तेरा ठिकाना है ता आंकि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला तुझ को इस की त़रफ़ उठाए। **99 :** ज़िक्र फ़रमाइये ऐ सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! अपनी क़ौम से जहन्नम के अन्दर कुफ़्फ़ार के आपस में झगड़ने का ह़ाल कि।

لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿۴۷﴾ قَالَ الَّذِيْنَ

तुम्हारे ताबेअ़ थे[100] तो क्या तुम हम से आग का कोई हिस्सा घटा लोगे वोह तकब्बुर

اسْتَكْبَرُوْۤا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَاۤ ۙ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿۴۸﴾ وَقَالَ

वाले बोले[101] हम सब आग में हैं[102] बेशक अल्लाह बन्दों में फ़ैसला फ़रमा चुका[103] और जो

الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ

आग में हैं उस के दारोग़ों से बोले अपने रब से दुआ़ करो हम पर अ़ज़ाब का एक दिन हलका

الْعَذَابِ ﴿۴۹﴾ قَالُوْۤا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ

कर दे[104] उन्हों ने कहा क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल निशानियां न लाते थे[105] बोले क्यूं नहीं[106]

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۵۰﴾ ع اِنَّا لَنَنْصُرُ ع

बोले तो तुम्हीं दुआ़ करो[107] और काफ़िरों की दुआ़ नहीं मगर भटकते फिरने को बेशक ज़रूर हम

رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿۵۱﴾ ۙ

अपने रसूलों की मदद करेंगे और ईमान वालों की[108] दुन्या की ज़िन्दगी में और जिस दिन गवाह खड़े होंगे[109]

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿۵۲﴾

जिस दिन ज़ालिमों को उन के बहाने कुछ काम न देंगे[110] और उन के लिये ला'नत है और उन के लिये बुरा घर[111]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿۵۳﴾ ۙ هُدًى

और बेशक हम ने मूसा को रहनुमाई अ़ता फ़रमाई[112] और बनी इसराईल को किताब का वारिस किया[113] अ़क़्ल मन्दों

وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۵۴﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ

की हिदायत और नसीहत को तो ऐ महबूब तुम सब्र करो[114] बेशक अल्लाह का वा'दा सच्चा है[115] और अपनों के गुनाहों की

100 : दुन्या में और तुम्हारी बदौलत ही काफ़िर बने **101 :** या'नी काफ़िरों के सरदार जवाब देंगे **102 :** हर एक अपनी मुसीबत में गिरिफ़्तार, हम में से कोई किसी के काम नहीं आ सकता। **103 :** ईमानदारों को उस ने जन्नत में दाख़िल कर दिया और काफ़िरों को जहन्नम में, जो होना था हो चुका। **104 :** या'नी दुन्या के एक दिन की मिक्दार तक हमारे अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ रहे। **105 :** क्या उन्हों ने ज़ाहिर मो'जिज़ात पेश न किये थे या'नी अब तुम्हारे लिये जाए उ़ज़्र बाक़ी न रही। **106 :** या'नी काफ़िर। अम्बिया के तशरीफ़ लाने और अपने कुफ़्र करने का इक़रार करेंगे। **107 :** हम काफ़िर के हक़ में दुआ़ न करेंगे और तुम्हारा दुआ़ करना भी बेकार है। **108 :** उन को ग़लबा अ़ता फ़रमा कर और हुज्जते क़विय्या दे कर और उन के दुश्मनों से इन्तिक़ाम ले कर। **109 :** वोह क़ियामत का दिन है कि मलाएका रसूलों की तब्लीग़ और कुफ़्फ़ार की तक्ज़ीब की शहादत देंगे। **110 :** और काफ़िरों का कोई उ़ज़्र क़बूल न किया जाएगा। **111 :** या'नी जहन्नम। **112 :** या'नी तौरैत व मो'जिज़ात। **113 :** या'नी तौरैत का या उन के अम्बिया पर नाज़िल शुदा तमाम किताबों का। **114 :** अपनी क़ौम की ईज़ा पर। **115 :** वोह आप की मदद फ़रमाएगा, आप के दीन को ग़ालिब करेगा, आप के दुश्मनों को हलाक करेगा। कल्बी ने कहा कि आयते सब्र आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गई।

www.dawateislami.net

لِذَنۡۢبِكَ وَ سَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ بِالۡعَشِيِّ وَالۡاِبۡكَارِ ﴿۵۵﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ

मुआ़फ़ी चाहो[116] और अपने रब की ता'रीफ़ करते हुए सुब्ह़ और शाम उस की पाकी बोलो[117] वोह जो

يُجَادِلُوۡنَ فِيۡۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيۡرِ سُلۡطٰنٍ اَتٰٮهُمۡ ۙ اِنۡ فِيۡ صُدُوۡرِهِمۡ اِلَّا

अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बे किसी सनद के जो उन्हें मिली हो[118] उन के दिलों में नहीं मगर एक

كِبۡرٌ مَّا هُمۡ بِبَالِغِيۡهِ ۚ فَاسۡتَعِذۡ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡبَصِيۡرُ ﴿۵۶﴾

बड़ाई की हवस[119] जिसे न पहुंचेंगे[120] तो तुम अल्लाह की पनाह मांगो[121] बेशक वोही सुनता देखता है

لَخَلۡقُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ اَكۡبَرُ مِنۡ خَلۡقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ

बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश आदमियों की पैदाइश से बहुत बड़ी[122] लेकिन बहुत लोग

لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَمَا يَسۡتَوِي الۡاَعۡمٰى وَالۡبَصِيۡرُ ۙ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا

नहीं जानते[123] और अन्धा और अंख्यारा बराबर नहीं[124] और न वोह जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ وَلَا الۡمُسِيۡٓءُ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَتَذَكَّرُوۡنَ ﴿۵۸﴾ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ

काम किये और बदकार[125] कितना कम ध्यान करते हो बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है

لَّا رَيۡبَ فِيۡهَا وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۵۹﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادۡعُوۡنِيۡۤ

इस में कुछ शक नहीं लेकिन बहुत लोग ईमान नहीं लाते[126] और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो

اَسۡتَجِبۡ لَكُمۡ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ عِبَادَتِيۡ سَيَدۡخُلُوۡنَ

मैं क़बूल करूंगा[127] बेशक वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न्क़रीब जहन्नम

116 : या'नी अपनी उम्मत के (مدارک) **117 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला की इबादत पर मुदावमत रखो। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : इस से पांचों नमाज़ें मुराद हैं। **118 :** उन झगड़ा करने वालों से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुराद हैं। **199 :** और उन का येही तकब्बुर उन के तक्ज़ीब व इन्कार और कुफ़्र के इख़्तियार करने का बाइस हुवा कि उन्हों ने येह गवारा न किया कि कोई उन से ऊंचा हो, इस लिये सय्यिदे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّم से अ़दावत की, ब ईं ख़याले फ़ासिद कि अगर आप को नबी मान लेंगे तो अपनी बड़ाई जाती रहेगी और उम्मती और छोटा बनना पड़ेगा और हवस रखते हैं बड़े बनने की। **120 :** और बड़ाई मुयस्सर न आएगी बल्कि हुज़ूर की मुख़ालफ़त व इन्कार उन के ह़क़ में ज़िल्लत और रुस्वाई का सबब होगा। **121 :** ह़ासिदों के मक्र व कैद से। **122 :** येह आयत मुन्किरीने बअ़्स के रद में नाज़िल हुई, उन पर हुज्जत क़ाइम की गई कि जब तुम आस्मान व ज़मीन की पैदाइश पर बा वुजूद इन की इस अ़ज़मत और बड़ाई के **अल्लाह** तआ़ला को क़ादिर मानते हो तो फिर इन्सान को दोबारा पैदा कर देना उस की क़ुदरत से क्यूं बईद समझते हो। **123 :** बहुत लोगों से मुराद यहां कुफ़्फ़ार हैं और उन के इन्कारे बअ़्स का सबब उन की बे इल्मी है कि वोह आस्मान व ज़मीन की पैदाइश पर क़ादिर होने से बअ़्स पर इस्तिद्लाल नहीं करते, तो वोह मिस्ल अन्धे के हैं और जो मख़्लूक़ात के वुजूद से ख़ालिक़ की क़ुदरत पर इस्तिद्लाल करते हैं वोह मिस्ल बीना के हैं। **124 :** या'नी जाहिल व आ़लिम यक्सां नहीं। **125 :** या'नी मोमिने सालेह़ और बदकार येह दोनों भी बराबर नहीं। **126 :** मरने के बा'द ज़िन्दा किये जाने पर यक़ीन नहीं करते। **127 :** **अल्लाह** तआ़ला बन्दों की दुआ़एं अपनी रह़मत से क़बूल फ़रमाता है और इन के क़बूल के लिये चन्द शर्तें हैं : **एक** इख़्लास दुआ़ में। **दूसरे** येह कि क़ल्ब ग़ैर की त़रफ़ मश्ग़ूल न हो। **तीसरे** येह कि वोह दुआ़ किसी अम्रे मम्नूअ़ पर मुश्तमिल न हो। **चौथे** येह कि **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत पर यक़ीन रखता हो। **पांचवें** येह कि शिकायत न करे कि मैं ने दुआ़ मांगी क़बूल न हुई। जब इन शर्तों से दुआ़ की जाती है क़बूल होती है। ह़दीस शरीफ़ में है कि दुआ़ करने वाले की दुआ़ क़बूल

www.dawateislami.net

جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ﴿٦٠﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَ النَّهَارَ

में जाएंगे ज़लील हो कर **अल्लाह** है जिस ने तुम्हारे लिये रात बनाई कि उस में आराम पाओ और दिन बनाया

مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا

आंखें खोलता[128] बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़्ल वाला है लेकिन बहुत आदमी शुक्र

یَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى

नहीं करते वोह है **अल्लाह** तुम्हारा रब हर चीज़ का बनाने वाला उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो कहां

تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ یُؤْفَكُ الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ یَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

औंधे जाते हो[129] यूंही औंधे होते हैं[130] वोह जो **अल्लाह** की आयतों का इन्कार करते हैं[131]

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً وَّ صَوَّرَكُمْ

अल्लाह है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन ठहराव बनाई[132] और आस्मान छत[133] और तुम्हारी तस्वीर की

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚۖ

तो तुम्हारी सूरतें अच्छी बनाईं[134] और तुम्हें सुथरी चीज़ें[135] रोज़ी दीं येह है **अल्लाह** तुम्हारा रब

فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ

तो बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह** रब सारे जहान का वोही ज़िन्दा है[136] उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं तो उसे पूजो

مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ

निरे उसी के बन्दे हो कर सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहान का रब तुम फ़रमाओ मैं मन्अ़ किया गया हूं

اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَیِّنٰتُ مِنْ

कि उन्हें पूजूं जिन्हें तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो[137] जब कि मेरे पास रोशन दलीलें[138] मेरे रब की त़रफ़

होती है या तो उस की मुराद दुन्या ही में उस को जल्द दे दी जाती है या आख़िरत में उस के लिये ज़ख़ीरा होती है या उस से उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा कर दिया जाता है। आयत की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है कि दुआ़ से मुराद इ़बादत है और कु़रआने करीम में दुआ़ ब मा'ना इ़बादत बहुत जगह वारिद है। ह़दीस शरीफ़ में है (ابوداود و ترمذی) "اَلدُّعَآءُ هُوَ الْعِبَادَةُ" इस तक़्दीर पर आयत के मा'ना येह होंगे कि तुम मेरी इ़बादत करो मैं तुम्हें सवाब दूंगा। **128 :** कि उस में अपने काम ब इत़्मीनान अन्जाम दो। **129 :** कि उस को छोड़ कर बुतों की इ़बादत करते हो और उस पर ईमान नहीं लाते बा वुजूदे कि दलाइल क़ाइम हैं। **130 :** और ह़क़ से फिरते हैं बा वुजूद दलाइल क़ाइम होने के। **131 :** और उन में ह़क़ जोयाना (ह़क़ के मुतलाशी हो कर) नज़र व तअम्मुल नहीं करते। **132 :** कि वोह तुम्हारी क़रार गाह हो ज़िन्दगी में भी और बा'दे मौत भी। **133 :** कि उस को मिस्ल कु़ब्बा के बुलन्द फ़रमाया। **134 :** कि तुम्हें रास्त क़ामत पाकीज़ा रू मुतनासिबुल आ'ज़ा किया, बहाइम की त़रह़ न बनाया कि औंधे चलते। **135 :** नफ़ीस मआकिल व मशारिब (खाने पीने की अश्या) **136 :** कि उस की फ़ना मुह़ाल है। **137 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे ना बकार ने बराहे जहालत व गुमराही अपने दीने बात़िल की त़रफ़ हु़ज़ूरे पुरनूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को दा'वत

www.dawateislami.net

رَّبِّیْ ۫ وَ اُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۶۶﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

से आई और मुझे हुक्म हुवा है कि रब्बुल आलमीन के हुज़ूर गरदन रखूं वोही है जिस ने तुम्हें[139] मिट्टी

تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْۤا

से बनाया फिर[140] पानी की बूंद से[141] फिर ख़ून की फुटक से फिर तुम्हें निकालता है बच्चा फिर तुम्हें बाक़ी रखता है कि अपनी जवानी

اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَ لِتَبْلُغُوْۤا

को पहुंचो[142] फिर इस लिये कि बूढ़े हो और तुम में कोई पहले ही उठा लिया जाता है[143] और इस लिये कि तुम एक मुक़र्रर वा'दे

اَجَلًا مُّسَمًّى وَّ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَ یُمِیْتُ ۚ فَاِذَا

तक पहुंचो[144] और इस लिये कि समझो[145] वोही है कि जिलाता (ज़िन्दा करता) है और मारता है फिर जब

قَضٰۤى اَمْرًا فَاِنَّمَا یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿۶۸﴾ ع اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ

कोई हुक्म फ़रमाता है तो उस से येही कहता है कि हो जा जभी वोह हो जाता है[146] क्या तुम ने उन्हें न देखा जो

یُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى یُصْرَفُوْنَ ﴿۶۹﴾ ۛۚ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَ

अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं[147] कहां फेरे जाते हैं[148] वोह जिन्हों ने झुटलाई किताब[149] और

بِمَاۤ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ۫ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿۷۰﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ

जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा[150] वोह अन्क़रीब जान जाएंगे[151] जब उन की गरदनों में तौक़ होंगे

وَ السَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ﴿۷۱﴾ فِی الْحَمِیْمِ ۙ۬ ثُمَّ فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ ۚ ثُمَّ

और ज़न्जीरें[152] घसीटे जाएंगे खौलते पानी में फिर आग में दहकाए जाएंगे[153] फिर

قِیْلَ لَهُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۳﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا

उन से फ़रमाया जाएगा कहां गए वोह जो तुम शरीक बताते थे[154] अल्लाह के मुक़ाबिल कहेंगे वोह तो हम से गुम गए[155]

दी थी और आप से बुत परस्ती की दरख़्वास्त की थी, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **138 :** अक़्ल व वह्य की, तौहीद पर दलालत करने वाली। **139 :** या'नी तुम्हारे अस्ल और तुम्हारे जद्दे आ'ला हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को **140 :** बा'द हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के उन की नस्ल को **141 :** या'नी क़तूरए मनी से **142 :** और तुम्हारी कुव्वत कामिल हो। **143 :** या'नी बुढ़ापे या जवानी को पहुंचने से क़ब्ल ही, येह इस लिये किया कि तुम ज़िन्दगानी करो। **144 :** ज़िन्दगानी के वक़्ते महदूद तक। **145 :** दलाइले तौहीद को और ईमान लाओ। **146 :** या'नी अश्या का वुजूद उस के इरादे का ताबेअ़ है कि उस ने इरादा फ़रमाया और शै मौजूद हुई न कोई कुल्फ़त (तक्लीफ़) है न कोई मशक़्क़त है न किसी सामान की हाजत। येह उस के कमाले क़ुदरत का बयान है। **147 :** या'नी क़ुरआने पाक में। **148 :** ईमान और दीने हक़ से। **149 :** या'नी कुफ़्फ़ार जिन्हों ने क़ुरआन शरीफ़ की तक्ज़ीब की। **150 :** उस की भी तक्ज़ीब की और उस के रसूलों के साथ जो चीज़ भेजी इस से मुराद या तो वोह किताबें हैं जो पहले रसूल लाए या वोह अक़ाइदे हक़्क़ा जो तमाम अम्बिया ने पहुंचाए मिस्ले तौहीदे इलाही, और बअ़्से बा'दे मौत के। **151 :** अपनी तक्ज़ीब का अन्जाम। **152 :** और उन ज़न्जीरों से **153 :** और वोह आग बाहर से भी उन्हें घेरे होगी और उन

www.dawateislami.net

بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۷۴﴾

बल्कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे[156] अल्लाह यूंही गुमराह करता है काफ़िरों को

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ بِمَا كُنْتُمْ

येह[157] उस का बदला है जो तुम ज़मीन में बातिल पर खुश होते थे[158] और उस का बदला है जो तुम

تَمْرَحُوْنَ ﴿۷۵﴾ اُدْخُلُوْۤا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

इतराते थे जाओ जहन्नम के दरवाज़ों में उस में हमेशा रहने तो क्या ही बुरा ठिकाना

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ

मग़रूरों का[159] तो तुम सब्र करो बेशक अल्लाह का वा'दा[160] सच्चा है तो अगर हम तुम्हें दिखा दें[161] कुछ वोह चीज़ जिस का

نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿۷۷﴾ وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا

उन्हें वा'दा दिया जाता है[162] या तुम्हें पहले ही वफ़ात दें बहर हाल उन्हें हमारी ही तरफ़ फिरना[163] और बेशक हम ने

مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ

तुम से पहले कितने ही रसूल भेजे कि जिन में किसी का अह़वाल तुम से बयान फ़रमाया[164] और किसी का अह़वाल न बयान

عَلَيْكَ ؕ وَ مَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ

फ़रमाया[165] और किसी रसूल को नहीं पहुंचता कि कोई निशानी ले आए बे हुक्म खुदा के फिर जब अल्लाह

اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَ خَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۷۸﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ ع ٨ ١٣

का हुक्म आएगा[166] सच्चा फ़ैसला फ़रमा दिया जाएगा[167] और बातिल वालों का वहां ख़सारा अल्लाह है जिस ने

के अन्दर भी भरी होगी। (अल्लाह तआला की पनाह) **154 :** या'नी वोह बुत क्या हुए जिन की तुम इबादत करते थे **155 :** कहीं नज़र ही नहीं आते। **156 :** बुतों की परस्तिश का इन्कार कर जाएंगे। फिर बुत हाज़िर किये जाएंगे और कुफ़्फ़ार से फ़रमाया जाएगा कि तुम और तुम्हारे येह मा'बूद सब जहन्नम का ईंधन हो। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि जहन्नमियों का येह कहना कि हम पहले कुछ पूजते ही न थे इस के येह मा'ना हैं कि अब हमें ज़ाहिर हो गया कि जिन्हें हम पूजते थे वोह कुछ न थे कि कोई नफ़्अ या नुक़्सान पहुंचा सकते। **157 :** या'नी येह अ़ज़ाब जिस में तुम मुब्तला हो **158 :** या'नी शिर्क व बुत परस्ती व इन्कारे बअ़्स पर। **159 :** जिन्हों ने तकब्बुर किया और ह़क़ को क़बूल न किया। **160 :** कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब फ़रमाने का **161 :** तुम्हारी वफ़ात से पहले **162 :** अन्वाए अ़ज़ाब से, मिस्ल बद्र में मारे जाने के जैसा कि येह वाक़ेअ़ हुवा। **163 :** और अ़ज़ाबे शदीद में गिरिफ़्तार होना। **164 :** इस क़ुरआन में सराह़त के साथ **165 :** क़ुरआन शरीफ़ में तफ़्सीलन व सराह़तन (مرقاة) और उन तमाम अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को अल्लाह तआला ने निशानी और मो'जिज़ात अ़ता फ़रमाए और उन की क़ौमों ने उन से मुजादला (झगड़ा) किया और उन्हें झुटलाया इस पर उन हज़रात ने सब्र किया। इस तज़्किरे से मक़्सूद नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली है कि जिस त़रह के वाक़िआत क़ौम की तरफ़ से आप को पेश आ रहे हैं और जैसी ईज़ाएं पहुंच रही हैं पहले अम्बिया के साथ भी येही हालात गुज़र चुके हैं, उन्हों ने सब्र किया आप भी सब्र फ़रमाएं। **166 :** कुफ़्फ़ार पर अ़ज़ाब नाज़िल करने की बाबत **167 :** रसूलों के और उन की तक्ज़ीब करने वालों के दरमियान।

www.dawateislami.net

جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا

तुम्हारे लिये चौपाए बनाए कि किसी पर सुवार हो और किसी का गोश्त खाओ और तुम्हारे लिये उन में कितने ही

مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ

फ़ाएदे हैं[168] और इस लिये कि तुम उन की पीठ पर अपने दिल की मुरादों को पहुंचो[169] और उन पर[170] और कश्तियों पर[171]

تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا

सुवार होते हो और वोह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है[172] तो अल्लाह की कौन सी निशानी का इन्कार करोगे[173] तो क्या उन्हों ने

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا

ज़मीन में सफ़र न किया कि देखते उन से अगलों का कैसा अन्जाम हुवा वोह

اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا

उन से बहुत थे[174] और उन की कुव्वत[175] और ज़मीन में निशानियां उन से ज़ियादा[176] तो उन के क्या काम आया जो

كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ

उन्हों ने कमाया[177] तो जब उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें लाए तो वोह उसी पर ख़ुश रहे जो उन के पास

مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

दुन्या का इल्म था[178] और उन्हीं पर उलट पड़ा जिस की हंसी बनाते थे[179] फिर जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देखा

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ

बोले हम एक अल्लाह पर ईमान लाए और जो उस के शरीक करते थे उन से मुन्किर हुए[180] तो उन के

يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ

ईमान ने उन्हें काम न दिया जब उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब देख लिया अल्लाह का दस्तूर जो उस के बन्दों

168 : कि उन के दूध और ऊन वग़ैरा काम में लाते हो और उन की नस्ल से नफ़्अ़ उठाते हो। **169 :** या'नी अपने सफ़रों में अपने वज़्नी सामान उन की पीठों पर लाद कर एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम पर ले जाते हो। **170 :** ख़ुश्की के सफ़रों में **171 :** दरियाई सफ़रों में **172 :** जो उस की कुदरत व वह्दानिय्यत पर दलालत करती हैं। **173 :** या'नी वोह निशानियां ऐसी ज़ाहिरो बाहिर हैं कि उन के इन्कार की कोई सूरत ही नहीं। **174 :** ता'दाद उन की कसीर थी। **175 :** और जिस्मानी ताक़त भी उन से ज़ियादा थी। **176 :** या'नी उन के महल और इमारतें वग़ैरा। **177 :** मा'ना येह हैं कि अगर येह लोग ज़मीन में सफ़र करते तो उन्हें मा'लूम हो जाता कि मुन्किरीने मुतमर्रिदीन (सरकशी करने वालों) का क्या अन्जाम हुवा और वोह किस तरह हलाक व बरबाद हुए और उन की ता'दाद उन के ज़ोर और उन के माल कुछ भी उन के काम न आ सके। **178 :** और उन्हों ने इल्मे अम्बिया की तरफ़ इल्तिफ़ात न किया, उस की तहसील और उस से इन्तिफ़ाअ़ की तरफ़ मुतवज्जेह न हुए बल्कि उस को हक़ीर जाना और उस की हंसी बनाई और अपने दुन्यवी इल्म को जो हक़ीक़त में जहल है पसन्द करते रहे। **179 :** या'नी अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब। **180 :** या'नी जिन बुतों को उस के सिवा पूजते थे उन से बेज़ार हुए।

www.dawateislami.net